''मीठे बच्चे – जैसे बाप का पार्ट है सर्व का कल्याण करना, ऐसे बाप समान कल्याणकारी बनो, अपना और सर्व का कल्याण करो''

प्रश्नः- बच्चों की किस एक विशेषता को देख बापदादा बहुत खुश होते हैं?

उत्तरः- गरीब बच्चे बाबा के यज्ञ में 8 आना, एक रुपया भेज देते हैं। कहते हैं बाबा इसके बदले हमको महल देना। बाबा कहते बच्चे, यह एक रुपया भी शिवबाबा के खजाने में जमा हो गया। तुमको 21 जन्मों के लिए महल मिल जायेंगे। सुदामा का मिसाल है ना। बिगर कौड़ी खर्चा तुम बच्चों को विश्व की बादशाही मिल जाती है। बाबा गरीब बच्चों की इस विशेषता पर बहुत खुश होते हैं।

गीतः- तुम्हें पाके हमने...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सदा अपार खुशी में रहने के लिए बेहद की नॉलेज बुद्धि में रखना है। ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरकर अपना और सर्व का कल्याण करना है। नॉलेज में बहुत-बहुत होशियार बनना है।

2) भविष्य 21 जन्मों के राज्य भाग्य का अधिकार लेने के लिए अपना बैग बैगेज सब ट्रांसफर कर देना है। इस छी-छी दुनिया से छुटकारा पाने की युक्ति रचनी है।

वरदानः- एक बाप के लव में लवलीन रह सदा चढ़ती कला का अनुभव करने वाले सफलतामूर्त भव

सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ। ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बांध देते हैं। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू का काम करता है। वह रुहानी जादूगर बन जाती है।

स्लोगनः- योगी तू आत्मा वह है जो अन्तर्मुखी बन लाइट माईट रूप में स्थित रहता है।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

आपको जो भी ड्यूटी मिली हुई है, उसमें सदा एक्यूरेट रहो, जो ड्यूटी पर एक्यूरेट रहता है उसको सभी ईमानदार वा फेथफुल की नज़र से देखते हैं। यहाँ भी जो एक्यूरेट सेवा पर रहते हैं वही बाप के फेथफुल हैं। एक होता है बाप में पूरा फेथ, दूसरा है बाप के साथ सेवा में भी फेथफुल। ऐसे फेथफुल निश्चयबुद्धि बच्चे सदा विजयी और निश्चिंत रहते हैं।

''मीठे बच्चे – सबसे बड़ी बीमारी देह-अभिमान की है, इससे ही डाउनफाल हुआ है, इसलिए अब देही-अभिमानी बनो''

प्रश्नः- तुम बच्चों की कर्मातीत अवस्था कब होगी?

उत्तरः- जब योगबल से कर्मभोग पर विजय प्राप्त करेंगे। पूरा-पूरा देही-अभिमानी बनेंगे। यह देह-अभिमान का ही रोग सबसे बड़ा है, इससे दुनिया पतित हुई है। देही-अभिमानी बनो तो वह खुशी, वह नशा रहे, चलन भी सुधरे।

गीतः- रात के राही थक मत जाना...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) देह-अभिमान में आकर कोई भी उल्टा-सुल्टा कार्य नहीं करना है। देही-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है। अपनी सीरत (चलन) सुधारते रहना है।
2) बहुत-बहुत मीठा, शीतल बनना है। अन्दर में क्रोध मोह का जो भूत है, उसे निकाल देना है।

वरदानः- रिगार्ड देने का रिकार्ड ठीक रख, खुशी का महादान करने वाले पुण्य आत्मा भव

वर्तमान समय चारों ओर रिगार्ड देने का रिकार्ड ठीक करने की आवश्यकता है। यही रिकार्ड फिर चारों ओर बजेगा। रिगार्ड देना और रिगार्ड लेना, छोटे को भी रिगार्ड दो, बड़े को भी रिगार्ड दो। यह रिगार्ड का रिकार्ड अभी निकलना चाहिए, तब खुशी का दान करने वाले महादानी पुण्य आत्मा बनेंगे। किसी को रिगार्ड देकर खुश कर देना – यह बड़े से बड़ा पुण्य का काम है, सेवा है।

स्लोगनः- हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझकर चलो तो एवररेडी रहेंगे।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

जैसे ज्ञान की सब्जेक्ट है, वैसे सेवा की भी सब्जेक्ट है, जो इसमें फेथफुल निश्चयबुद्धि है वही नम्बर आगे जा सकता है। सुबह से रात तक अपना फिक्स प्रोग्राम, डेली डायरी बनाओ, क्योंकि जिम्मेवार आत्मायें हो, रिवाजी आत्मायें नहीं, विश्व कल्याणकारी आत्मायें हो। तो जो जितना बड़ा आदमी होता है, उसकी दिनचर्या सेट होती है।

''मीठे बच्चे – याद की यात्रा में रेस करो तो पुण्य आत्मा बन जायेंगे, स्वर्ग की बादशाही मिल जायेगी''

प्रश्नः- ब्राह्मण जीवन में अगर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं होता है तो क्या समझना चाहिए?

उत्तरः- जरूर सूक्ष्म में भी कोई न कोई पाप होते हैं। देह-अभिमान में रहने से ही पाप होते हैं, जिस कारण उस सुख की अनुभूति नहीं कर सकते हैं। अपने को गोप-गोपियाँ समझते हुए भी अतीन्द्रिय सुख की भासना नहीं आती, जरूर कोई भूल होती है इसलिए बाप को सच बतलाकर श्रीमत लेते रहो।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) मंजिल बहुत ऊंची है इसलिए कदम-कदम पर सर्जन से राय लेनी है। श्रीमत पर चलने में ही फायदा है, बाप से कुछ भी छिपाना नहीं है।
2) देह और देहधारियों से बुद्धि का योग हटाए एक बाप से लगाना है। कर्म करते भी एक बाप की याद में रहने का पुरुषार्थ करना है।

वरदानः- सदा एकरस सम्पन्न मूड में रहने वाले पुरुषार्थी सो प्रालब्धी स्वरूप भव

बापदादा वतन से देखते हैं कि कई बच्चों के मूड बहुत बदलते हैं, कभी आश्चर्यवत की मूड, कभी क्वेश्चन मार्क की मूड, कभी कनफ्यूज़ की मूड, कभी टेन्शन, कभी अटेन्शन का झूला... लेकिन संगमयुग प्रालब्धी युग है न कि पुरुषार्थी इसलिए जो बाप के गुण वही बच्चों के, जो बाप की स्टेज वही बच्चों की – यही है संगमयुग की प्रालब्ध। तो सदा एकरस एक ही सम्पन्न मूड में रहो तब कहेंगे बाप समान अर्थात् प्रालब्धी स्वरूप वाले।

स्लोगनः- बापदादा के हाथ में बुद्धि रूपी हाथ हो तो परीक्षाओं रूपी सागर में हिलेंगे नहीं।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

फेथफुल की पहली निशानी है – हर सेकण्ड हर कदम श्रीमत पर एक्यूरेट चलना। एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो हेमर खाने के अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यु। खेल लगता है ना। देखते रहते हो और मुस्कुराते रहते हो, दुआयें देते रहते हो। हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले, निश्चयबुद्धि निश्चिंत आत्मा।

''मीठे बच्चे – यह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है, इससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो, 21 जन्मों के लिए सच्ची कमाई हो जाती है''

प्रश्नः- बाप जो मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं वह धारण कब होंगी?

उत्तरः- जब बुद्धि पर परमत वा मनमत का प्रभाव नहीं होगा। जो बच्चे सुनी सुनाई बातों पर चलते हैं, उनकी बुद्धि में धारणा हो नहीं सकती। सिवाए ज्ञान के और कुछ भी कोई सुनाता है तो वह जैसे दुश्मन है। झूठी बातें सुनाने वाले बहुत हैं इसलिए हियर नो ईविल, सी नो ईविल, मनुष्य से देवता बनने के लिए एक बाप की श्रीमत पर ही चलना है।

गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) यहाँ बाप समान सुख का सागर, प्रेम का सागर बनना है। सर्वगुण धारण करने हैं। किसी को भी दु:ख नहीं देना है।

2) सुनी-सुनाई बातों पर कभी विश्वास नहीं करना है, परमत पर नहीं चलना है। हियर नो ईविल, सी नो ईविल...।

वरदानः- मैं पन के बोझ को समाप्त कर प्रत्यक्षफल का अनुभव करने वाले बालक सो मालिक भव

जब किसी भी प्रकार का मैं पन आता है तो बोझ सिर पर आ जाता है। लेकिन जब बाप ऑफर कर रहे हैं कि सब बोझ मुझे दे दो आप सिर्फ नाचों, उड़ो... फिर यह क्वेश्चन क्यों – कि सर्विस कैसे होगी, भाषण कैसे करेंगे – आप सिर्फ निमित्त समझकर कनेक्शन पावर हाउस से जोड़कर बैठ जाओ, दिलशिकस्त नहीं बनो तो बापदादा सब कुछ स्वत: करा देंगे। बालक सो मालिक समझकर श्रेष्ठ स्टेज पर स्थित रहो तो प्रत्यक्ष फल की अनुभूति करते रहेंगे।

स्लोगनः- ज्ञान दान के साथ-साथ गुणदान करो तो सफलता मिलती रहेगी।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है। कई बच्चों में हिम्मत है इसलिए कोई भी बात होती है तो कहते हैं– हाँ करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत तो है, लेकिन फेथ नहीं है। फेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फेथफुल का अर्थ ही है – मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि, उनके मुख से कभी हिम्मतहीन बनाने वाले शब्द नहीं निकल सकते।

''मीठे बच्चे – तुम्हें श्रीमत पर तत्वों सहित सारी दुनिया को पावन बनाने की सेवा करनी है, सबको सुख और शान्ति का रास्ता बताना है''

प्रश्नः- तुम बच्चे अपनी देह को भी भूलने का पुरुषार्थ करते हो इसलिए तुम्हें किस चीज़ की दरकार नहीं हैं?

उत्तरः- चित्रों की। जब यह चित्र (देह) ही भूलना है तो उन चित्रों की क्या दरकार है। स्वयं को आत्मा समझ विदेही बाप को ओर स्वीट होम को याद करो। यह चित्र तो हैं छोटे बच्चों के लिए अर्थात् नयों के लिए। तुम्हें तो याद में रहना है और सबको याद कराना है। धंधा आदि करते सतोप्रधान बनने के लिए याद में ही रहने का अभ्यास करो।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बाप समान महिमा योग्य बनने के लिए फॉलो फादर करना है।
2) यह अन्तिम जन्म है, अब घर जाना है इसलिए खुशी में अन्दर ही अन्दर नगाड़े बजते रहें। कर्मभोग को कर्मयोग से अर्थात् बाप की याद से खुशी-खुशी चुक्तू करना है।

वरदानः- बालक सो मालिकपन की स्मृति से सर्व खजानों के अधिकारी, प्राप्ति सम्पन्न भव

हम बाप के सर्व खजानों के बालक सो मालिक हैं, नेचुरल योगी, नेचुरल स्वराज्य अधिकारी हैं। इस स्मृति से सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनो। यही गीत सदा गाते रहो कि ''पाना था सो पा लिया।'' खोया-पाया, खोया-पाया यह खेल नहीं करो। पा रहा हूँ, पा रहा हूँ – यह अधिकारी के बोल नहीं। जो सम्पन्न बाप के बालक, सागर के बच्चे हैं वह नौकर के समान मेहनत कर नहीं सकते।

स्लोगनः- योगबल द्वारा कर्मभोग पर विजय प्राप्त करना – यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

सबसे पहले स्वयं में पूरा फेथ (विश्वास) चाहिए फिर बाप-दादा और सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। जितना फेथफुल बनकर, निश्चयबुद्धि होकर कोई कर्तव्य करेंगे तो फेथफुल होने से सक्सेसफुल हो ही जायेंगे। फेथफुल होने से हर कर्तव्य, हर संकल्प, हर बोल पावरफुल होगा।

''मीठे बच्चे – एक बाप ही नम्बरवन एक्टर है जो पतितों को पावन बनाने की एक्ट करते हैं, बाप जैसी एक्ट कोई कर नहीं सकता''

प्रश्नः- सन्यासियों का योग जिस्मानी योग है, रुहानी योग बाप ही सिखलाते हैं, कैसे?

उत्तरः- सन्यासी ब्रह्म तत्व से योग रखना सिखलाते हैं। अब वह तो रहने का स्थान है। तो वह जिस्मानी योग हो गया। तत्व को सुप्रीम नहीं कहा जाता। तुम बच्चे सुप्रीम रूह से योग लगाते इसलिए तुम्हारा योग रुहानी योग है। यह योग बाप ही सिखला सकते, दूसरा कोई भी सिखला न सके क्योंकि वही तुम्हारा रुहानी बाप है।

गीतः- तू प्यार का सागर है...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सच्चे-सच्चे आशिक बन हाथों से काम करते बुद्धि से माशूक को याद करने की प्रैक्टिस करनी है। बाप की याद से हम स्वर्गवासी बन रहे हैं, इस खुशी में रहना है।

2) सूर्यवंशी डिनायस्टी में तख्तनशीन बनने के लिए मात-पिता को पूरा-पूरा फॉलो करना है। बाप समान नॉलेजफुल बन सबको रास्ता बताना है।

वरदानः- ताज और तिलक को धारण कर बापदादा के मददगार बनने वाले दिलतख्तनशीन भव

जब कोई तख्त पर बैठते हैं तो तिलक और ताज उनकी निशानी होती है। ऐसे जो दिल तख्तनशीन हैं उनके मस्तक पर सदैव अविनाशी आत्मा की स्थिति का तिलक दूर से ही चमकता हुआ नजर आता है। सर्व आत्माओं के कल्याण की शुभ भावना उनके नयनों से वा मुखड़े से दिखाई देती है। उनका हर संकल्प, वचन और कर्म बाप के समान होता है।

स्लोगनः- सरल याद के लिए सरलता का गुण धारण करो, संस्कारों को सरल बनाओ।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

विजयी बनने का फाउन्डेशन है ''निश्चय'', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। लेकिन सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, अपने आपमें भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी।

''बापदादा द्वारा मिले हुए खजानों को स्वयं में समाकर कार्य में लगाओ, अनुभव की अथॉरिटी बनो''

- आज चारों ओर के सर्व खजाने जमा करने वाले सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। सबसे पहले बड़े ते बड़ा खजाना है ज्ञान धन, जिससे मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हुई है। साथ में योग का भी खजाना है जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। धारणा करने का खजाना, जिससे सर्व गुणों की प्राप्ति होती है। सेवा का खजाना जिससे दुआओं का खजाना, खुशी का खजाना प्राप्त होता है। सबसे बड़े ते बड़ा खजाना वर्तमान संगमयुग का है, समय का है क्योंकि सारे कल्प में यह संगम का समय अमूल्य खजाना है।
- खजाने को धारण करने के लिए एक तो अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बना सकते हैं, दूसरा सदा स्वयं सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना और तीसरा सेवा से खुशी का खजाना प्राप्त कर सकते हो।
- खजाने जमा करने में विशेष सम्बन्ध-सम्पर्क में आने में एक तो निमित्त भाव, निर्माण भाव, नि:स्वार्थ भाव, हर आत्मा प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखने की आवश्यकता है। तो पुण्य का खाता और दुआओं का खाता बहुत सहज जमा कर सकते हैं।
- बाप के खजाने को अपना खजाना बनाना है क्योंकि जितना खजाना भरपूर होगा उतना ही भरपूर अवस्था में अचल अडोल होंगे। जिसका जितना भण्डारा भरपूर है उसके नयनों से रूहानियत, चेहरे से मुस्कराहट और कर्म से हर एक गुण सभी को अनुभव होता है!

वरदान:- मास्टर त्रिकालदर्शी बन हर कर्म युक्तियुक्त करने वाले कर्मबन्धन मुक्त भव

जो भी संकल्प, बोल वा कर्म करते हो – वह मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर करो तो कोई भी कर्म व्यर्थ वा अनर्थ नहीं हो सकता। त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षीपन की स्थिति में स्थित होकर, कर्मों की गुह्य गति को जानकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराओ तो कभी भी कर्म के बन्धन में नहीं बंधेंगे। हर कर्म करते कर्मबन्धन मुक्त, कर्मातीत स्थिति का अनुभव करते रहेंगे।

स्लोगन:- जिनके पास हद के इच्छाओं की अविद्या है वही महान सम्पत्तिवान हैं।

अव्यक्त इशारे

निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो

जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता रहता है। तो आप के पास भी सर्व शक्तियों रूपी शस्त्र सदा साथ हैं, सिर्फ आवाहन करो अर्थात् मालिक बन आर्डर करो तो सफलता सदा हुई पड़ी है।